

जन्मभूमि की महिमा

कहानी लिखो प्रतियोगिता(विजेता)

“जो अपनी जन्मभूमि की महिमा को नहीं समझ सकता, वो संसार का कोई सुख प्राप्त नहीं कर सकता”, दादाजी अपनी कहानी खत्म करते हुए बोले बच्चों की भीड़ में रमेश नाम का लड़का भी बैठा था। रमेश एक अमीर परिवार का लड़का था, जो अपने अमीर होने पर बड़ा घमंड करता था। पूरे गांव में केवल एक ही स्कूल होने के कारण, रमेश भी और बच्चों की तरह उसी स्कूल में जाया करता था, हालांकि वो विद्यालय तो जाता था, पर उसे और सभी गरीब बच्चों के साथ पढ़ना पसंद नहीं था।

अपने स्कूल, पढ़ाई और अपने परिवार की परवाह न करते हुए रमेश अपने चाचा के घर चला गया वहाँ उसने कई सारे नये दोस्त बनाये और शहर का माहौल उसे पसंद आ गया अपनी जन्मभूमि और परिवार से दूर, वह भूल चूका था कि उसका एक गांव भी है उसका माता-पिता उसे काफी याद किया करते, परन्तु उसे उनकी कोई परवाह न थी।

रमेश धीरे-धीरे बड़ा हुआ उसने अपनी पढ़ाई पूरी की और आगे चलकर एक बड़ा व्यापारी बन गया स पैसे और यश की भूख में अंधा होकर, उसने ये तक भुला दिया कि उसके माता-पिता भी थे रमेश की शादी हुई और दो साल बाद उसके बच्चे भी हुए अब वह अपनी ही दुनिया में व्यस्त हो चूका था समय की घड़ी चलती रही और करीब दस सालों के बाद उसे खबर मिली कि उसके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी है, परन्तु पैसे की भूख में उस निर्लज्ज ने इसकी भी परवाह न की कुछ सालों बाद उसके बच्चे बड़े हुए और उनकी भी शादी हो गई शादी के तुरंत बाद उसके भी बच्चे उसे छोड़कर चले गए वह बिल्कुल अकेला और असाहाय हो गया उसके पास ना कोई धन बचा और ना ही कोई रिश्तेदार तब आखिरकार उसे समझ आया कि जन्मभूमि का क्या महत्व है, उसे एक-एक करके अपनी सभी गलतियों का पश्चाताप हुआ और आखिरकार उसकी भी मृत्यु अकेलेपन में हुई।

आलोक कुमार
मैकेनिकल
प्रथम वर्ष